Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

रामदरश मिश्र के काव्य में प्रतीक योजना

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

रामदरश मिश्र के काव्य में प्रतीक योजना

Dr. Manju Sharma

Asst. Prof. Hindi, Seth Banarasi Dass College of Education, Kurukshetra, Haryana, India

----------X----------

प्रतीक योजना :

'प्रतीक' शब्द अंग्रेजी के 'सिम्बाल' शब्द से परिभाषित किया जा सकता है। प्रतीक शब्द की सरल शब्दावली में व्याख्या करते समय हम कह सकते हैं कि जो शब्द प्रस्तुत संदर्भ से हटकर किसी अन्य की ओर संकेत करे, वह प्रतीक है। प्रतीक बिम्ब का निकटवर्ती होते हुए भी स्वरूप भिन्नता के कारण अलग अर्थ रखता है। वास्तव में बिम्ब का विकसित रूप प्रतीक है। भारतीय साहित्यशास्त्रा में शास्त्रावादी आचार्यों ने ध्वन्यार्थ की जो व्याख्या की है, प्रतीक उसके निकट की वस्तु है। प्रतीक के संदर्भ समाज, धर्म, राष्ट्र और वैयक्तिक आदि सभी से जुड़ सकते हैं।

हिन्दी काव्य में प्रत्येक युग में प्रतीकों का प्रयोग होता रहा है। आधुनिक कविता में प्रतीक का प्रयोग विकसित होते हुए भी लाक्षणिक शैली के रूप में विकसित दिखायी पड़ता है, फ्पाश्चात्य अलंकारों को आत्मसात करके नूतन प्रतीक योजना में लक्षणा के इतने अधिक प्रयोग हुए कि लाक्षणिकता इस काल के काव्य की शैली ही बन गया।य1

विषय की दृष्टि से प्रतीक पौराणिक रहस्यात्मक बौ(कि शु(प्रतीक आदि रूप में वर्गीकृत किए जा सकते हैं। आज प्रतीक काव्य का एक विशेष गुण बन गया है, 'प्रतीक' अन्तर्मुखी कवि का मूल्यवान अस्त्रा है, फ्प्रतीक सूक्ष्म की अभिव्यक्ति है। द्विवेदी–युग के बाद के काव्य में प्रभाव साम्य की ओर ध्यान अधिक रहने से धर्मों के प्रभाव को कवि ने अधिक महत्ता दी। प्रभाव जहाँ तक सामान्य है, वहाँ तक विषय–प्रधान है। कालिमा देखकर मन में मलीनता के भाव जागृत होते हैं, अतः भारतीय साहित्य में उस पाप का प्रतीक माना, सांसों के स्वतः आवागमन ने स्वाभाविकता के भाव प्रकट किये।य2

डॉ॰ भगीरथ मिश्र के अनुसार, फ्प्रतीक अपने रूप–कुरूपार्थ या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत वस्तु, भाव, विचार, क्रिया–कलाप, देश–जाति, संस्कृति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है, तब वह प्रतीक कहलाता है।य3

अज्ञेय जी का मत है कि, फ्विवेक की प्रतिभा भी प्रतीक सृष्टि की प्रतिभा का सहारा लेकर ही प्रतिपफलित होती या हो सकती है। मानवेत्तर सभी प्राणी, जिन्होंने प्रतीक सृष्टि की, यह प्रतिभा नहीं पाई है, एक सीमित जीवन ही जी सकते हैं। उनका जीवन स्थूल जगत की अगोचर अनुभूतियों तक ही सीमित रहता है और वे अनुभूतियाँ भी एक–दूसरे को सम्प्रेष्य नहीं होती, क्योंकि सम्प्रेषण का कोई परिपक्व साधन उनके पास नहीं है।य4

इस तरह हम सकते हैं कि प्रतीकात्मक व्यंजना हमारी वाणी, ध्वनि, रंग–रूप, प्रवृत्तियों, शोकादिक अनुभवों, विचारों आदि की चेतना का अत्यधिक विस्तार करती है और इस प्रकार हम कवि के आशय, उसके विस्तृत अनुभव को बहुत कुछ स्वयं भी अनुभव करने में समर्थ होते हैं अथवा प्रतीक के माध्यम से उसका कल्पनात्मक दर्शन करते हैं कारण कि कवि अपनी विशेष प्रतिभा शक्ति से अन्तर्जागतिक अनुभूतियों की यथार्थ अभिव्यक्ति के अर्थ–संकेतों से पुष्ट प्रतीक–शब्दों को बड़ी सतर्कता से प्रयुक्त करने में समर्थ होता है। वह उन पदार्थों, अनुभूतियों और शब्द के अर्थ–संकेत के आध्यात्मिक सम्बन्ध को भली–भाँति पहचानता है तभी वह उसका प्रयोग करता है। उनको अपनी कल्पना से आवेष्टित करता है।

स्पष्ट है कि काव्य में प्रतीक का प्रयोग किसी–न–किसी रूप में हमेशा होता रहा है। जिन कवियों की कविताओं मे कहीं सपाटबयानी दिखायी पड़ती है, वहीं उनकी दूसरी कविताओं में प्रतीक का सुन्दर प्रयोग भी हुआ है। प्रतीक एक प्रकार से काव्य–मूल्य बनकर प्रयुक्त हो रहा है। प्रतीक के स्वरूप और उसके काव्य में प्रयुक्त होने की प्रक्रिया के स्पष्टीकरण के बाद रामदरश मिश्र जी के काव्य में प्रतीकों के प्रयोगों का मूल्यांकन यहाँ प्रस्तुत है।

रामदरश मिश्र जी के काव्य में कुछ प्रतीक ऐसे हैं जो बार–बार आए हैं। हो सकता है, वे विशेष रूप से उन्हें प्रिय हों। जैसे–बसन्त, पफागुन, जंगल, धूप, सड़क, जल, गठरी आदि। अनेक अधिकतर प्रतीक प्रकृति से ही गृहीत है। सबसे पहले बसंत को ही लें, बसंत कई रूपों में चित्रित हुआ है। हमेशा वह यौवन, उल्लास, उमंग आदि का ही प्रतीक है। कहीं उसके आगमन पर खुशी जाहिर की गयी है तो कहीं उसके आने का उल्लास पंक्तियों से भरा हुआ है। उनके पहले दो संग्रहों–'पथ के गीत' और 'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ'–में बसंत का जो रूप चित्रित हुआ है, उससे बाद के अन्य संग्रहों में आये रूपों से पर्याप्त भिन्नता है। भिन्नता इसलिए है क्योंकि शुरू–शुरू में मिश्र जी की कविताएँ छायावाद से प्रभावित रही हैं। मार्क्सवाद के अध्ययन के बाद मिश्र जी की रचनाओं पर प्रगतिवाद का प्रभाव पड़ा है।

बसन्त का आगमन यौवन के आगमन का किसी विराट खुशी की प्राप्ति का प्रतीक है। 'बसंत आ रहा है' नामक काव्य में कवि अज्ञात पूफल को सम्बोधित कर रहा है जो कि निस्संदेह प्रेयसी का प्रतीक है। कवि कहता है कि मेरी सांसें तुम्हारी सुरभि से पागल हो गयी है, और बार–बार ऐसा महसूस होता है कि बसन्त आ रहा है। इस तरह बसन्त प्रिय के आगमन का प्रतीक बन जाता है। प्रिया के आगमन से पहले की अपनी अनुभूति को व्यक्त करने के बाद कवि सीधे नहीं कहता है कि मेरा यौवन लौटकर आ रहा है या तुम आ रही हो। वह कहता है–

www.ignited.in

फओ कोई अज्ञात पूफल

मेरी साँसें तुम्हारी सुरभि से पागल हो गयी हैं

और न जाने क्यों रह–रहकर ऐसा लग रहा है

कि

बसंत आ रहा है।य6 ;बसन्त आ रहा हैद्ध

इस तरह कवि प्रिय आगमन की बात को बसंत से जोड़ देता है। 'बसंत की हवा' भी यौवन की विशिष्ट अनुभूति का चित्रा है। कवि शुष्क जीवन को रंग देने की मांग कर रहा है, यौवन से विनती कर रहा है। स्वयं को भूला हुआ जानकर कहता है कि मुझे शाम का घर दो, ठिकाना दो। यौवन का दीवानापन स्पष्ट ही व्यक्त है। कवि कहता है–

फओ बसन्त की हवा

कंठ यह गीतों से भर दो,

कि जड़ नीरवरता को स्वर दो।य6

;ओ वसंत की हवाद्ध

इस तरह कवि का शुष्क जीवन मानों बसन्त की हवा से यौवन की मांग कर रहा है–कवि ने रीती आँखों में पूफलों के दीप और अपने शून्य के स्थान पर गुलमुहर की मांग की है जो उत्साह की ज्योति का प्रतीक है।

इसके पश्चात् प्रियागमन पर जैसे बसन्त बौरा उठता है, अर्थात् यौवन मतवाला हो उठता है, 'बौरा बौरा बसन्त' मचलते दीवाने यौवन की ओर संकेत करता है और दीवानगी की हद तो देखें–

फआओ प्रिय

आस गूंथ दूं उड़ती अलकों में दिग्–दिगन्त

देखों आया बसन्त।य7

बौरा–बौरा बसंतद्ध

यौवन के आगमन का उल्लास और गगनचुम्बी कल्पनाएँ बसन्त के माध्यम से प्रकट की गयी हैं–जिस तरह बसन्त के आने पर नीरस सेमल तक की पोर–पोर लाल हो उठती है, दिशाएँ मानो गंध रंगी चूनर–सी हो उसी तरह यौवन भी अच्छे–अच्छे नीरस व्यक्ति के दिल में भी उल्लास की चमक पैदा कर देता है। नीरस सेमल–जड़ मनुष्य की प्रतीक है।

बसन्तागम और बसन्त के होने के अहसास के बाद बसन्त का चला जाना, बसन्त की विदाई यौवन की विदाई की ही ओर संकेत करती है। एक काव्य में उन्होंने इस विदाई का भी चित्रा दिया है–वे एक बिम्ब द्वारा वहाँ स्पष्ट करते हैं कि नीम के पूफलों के गुच्छे थरथराकर स्तब्ध हो गए, न जाने क्यों एक पक्षी का स्वर अचानक गहरे दर्द में डूबकर तड़पफाता है, पिफर चुप हो जाता है जो कि एक गहरी व्यथा का परिचायक है–निश्चित ही बौरे–बौरे बसन्त के भोगने के बाद कवि को बसन्त का जाना अखरेगा ही, लेकिन यौवन का ज्वार जितनी तेजी से चढ़ता है, वैसे ही तेजी से उतर जाना निश्चित होता है। यौवन के जाने का अहसास ही कितना दुःखमय होता है, वह 'बसन्त की विदाई' नामक काव्य से सहज ही स्पष्ट होता है।

'जंगल' एक ऐसा प्रतीक है जिसका प्रयोग कवि ने कई स्थानों पर किया है। 'जंगल में मैं' और 'मुझमें जंगल' दो रूपों में कवि उसे लेता है। बंद जल में तैरती मछलियाँ–उस अवरोध का प्रतीक हैं जो मानव की सहज गति को रोकती हैं–

फयहाँ तो बंद जल में तैरती है मछलियाँ

बंद हवाओं पर टंगे हैं मकान

जैसे कुहरे पर आकाश पर आकाश

बन्द खुशबुओं को बेचती पिफरती हैं रातें

कहाँ है वह जंगल

जहाँ से कभी एक बार गुजरा था।य8

कवि परेशान है जहाँ से वह गुजरा था, जो उसने अनुभव किया था, वह यहाँ नहीं है और जलती हुई एक–एक अनुभूति उसमें से गुजरने लगती है। जंगल का जलना एक गहरे आघात् का द्योतक है। आग मानों एक भव्य शून्यता है, जो शांति से अन्दर ही अन्दर कवि को भस्मीभूत कर देती है। बंद जल सीमित दायरों का प्रतीक है और सुलगता जंगल सुलगती भावनाओं का प्रतीक है।

'पतझर' भी एक ऐसा प्रतीक है जो कवि द्वारा कई बार प्रयुक्त किया है। पतझर की दोपहर, 'पतझर की एक अनुभूति' नामक काव्य में उन्होंने पतझर को कई रूपों में लिया है।

'पतझर एक अनुभूति' नामक काव्य में पतझर उस आशा का प्रतीक है जो निराशा के बाद आती है। उस आशा को कवि कई प्रतीकों द्वारा स्पष्ट करता है। पतझर वास्तव में उदासी का नहीं, आशा का द्योतक है, क्योंकि पतझर के बाद ही बसन्त आता है। बसन्त की आशा पतझर से जुड़ी है। कवि भी आशावादी हो उठा है–

फनिष्पन्द, खिले गुलाब–सा

एक सन्नाटा आकाश में ठहरा है

और रह–रहकर लगता है

अब कहीं से कोयल बोल उठेगी।य9 ;पतझर : एक अनुभूतिद्ध

कोयल का बोलना भविष्य की खुशी का और आज का सन्नाटा उदासी का प्रतीक है। 'पतझर की दोपहर' में भी उदासी की एक गठरी रेखा खिंची दीखती है।

'दवा की तलाश' कविता में कवि ने 'माँ' को ग्रामीण संवेदना के प्रतीक में लिया है। कवि महानगर के जंगल से लौटने की प्रतीक्षा में है–

फमाँ अभी मरी नहीं है

वह अभी भी तुम्हारे लौटने का इंतजार कर रही है।य10 ;दवा की तलाशद्ध

'बसंत की सुबह' कविता में कवि ने अपनी जनवादी दृष्टि को प्रतीक के माध्यम से उभारा है। हवा शोषित जन–सामान्य के रूप में चित्रित है। इसमें वायदा करने वाले तथाकथित समाज–सेवक हैं। भ्रष्टाचार से परिपूर्ण घुटनमय सामाजिक–राजनीतिक वातावरण है। जनसेवा के नाम को भुनाने वाले समाज के कर्णधार हैं, स्वतंत्राता और सुखमय भविष्य की कल्पना करने वाली आंखों में सपने लिये हुए लोग घुटनपूर्ण वातावरण में छटपटा रहे हैं। कवि ने इन्हीं सब तथ्यों को इस कविता में प्रभावी रूप से समेटने का प्रयास किया है। कवि ने इन प्रतीकों के माध्यम से जन–सामान्य को क्रान्ति के लिये आह्वान किया है–

फतुम हवा हो

पफसलों की धुन पर

गाओ बनजारों की तरह आवारा प्रेम–गीत

जो जंगलों, मैदानों, घाटियों का अन्तराल तोड़कर

बहता रहे . . . बहता रहे . . .।य11

कल्प वृक्ष कविता में 'कल्पवृक्ष' सत्ताधारियों के झूठे आश्वासनों का प्रतीक है। कवि की जनवादी दृष्टि अवसरवादी राजनीति को देख नहीं पाती। नेताओं की अवसरवादिता पर कवि ने कल्पवृक्ष के माध्यम से व्यंग्य किया है–

फयह राजधानी है

यहाँ स्वर्ग जाने के लिए क्या नहीं है

कुर्सी है

कनाट प्लेस है

अंग्रेजी है

और यमुना का पानी है।य12

'उड़ों बगलो' कविता में बगुलों सुविधा–भोगी राजनेताओं का ही प्रतीक है। अपनी सुख–सुविधा के लिए ये नेता देश का अनुचित उपयोग करते हैं। ये नेता प्रत्यक्ष में देश–सेवा का नाटक करते हैं। अपने चरित्रा को स्वच्छ घोषित करते हैं, लेकिन ये जन–सामान्य का माँस तक खा जाते हैं–

फउड़ो बगुलो उड़ो

देश का आकाश अपना है

जहाँ चाहो मुड़ो

परों में हो श्वेतहंसी चाल

तैरती हो शांति स्वर में

दृष्टि में हो ताल

दे जहाँ चारा दिखाई

भूमि से आ जुड़ों।य13

;उड़ो बगलोद्ध

'पेड़' कविता में पेड़ जन–सामान्य का प्रतीक है। 'नया मौसम' परिवर्तन का प्रतीक है। जनता पिछली सरकार के कारनामों से असंतुष्ट होकर दूसरी पार्टी को अपना बहुमत देकर जिताती है। वह सोचती है कि नयी सरकार उसके हित के लिए कुछ करेगी, पर उसे सुनने को यह मिलता है कि वह इसी बात पर बहस में लगी हुई है कि पिछली सरकार के कौन–कौन से अभियोग लगाये जायें–

फउदास खड़े पेड़ कब से

पिछली आंधी में टूटे हुए पेड़

नये पत्तों की प्रतीक्षा में

और नया मौसम

जोर–शोर से अभी इसी बात पर बहस कह रहा है

कि आंधी के खिलापफ

कौन–कौन से अभियोग लगाये जायें।य14

बिल्ली रानी' शोषण की व्यवस्था का प्रतीक है। शोषक उन्हीं का शोषण कर सकते हैं जो असहाय और निर्बल हैं। वे उन लोगों का शोषण नहीं कर पाते जो समर्थ हैं। शक्ति सम्पन्न लोगों का शोषण संभव नहीं है। चिड़िया से कवि का तात्पर्य ईमानदार पत्राकार, प्रतिब(लेखक एवं सच्चे देश–सेवियों से है–

फबिल्ली रानी

तुम्हें जानना चाहिए था

कि चूहे और चिड़िया में भेद होता है

पूंछ और पंख का अन्तर

तुम्हें जानना चाहिए था बिल्ली रानी।य15

संदर्भ सूची :

1. डॉ॰ मोहन अवस्थी, आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प, पृ. 04

2. डॉ॰ मोहन अवस्थी, आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प, पृ. 296

3. डॉ॰ भगीरथ मिश्र, काव्य शास्त्रा, सप्तम् संस्करण, पृ. 263

4. डॉ॰ अनन्त मिश्र, उ(त, स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कविता, पृ. 308

5. रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, बैरंग बेनाम चिट्ठिòयां, पृ. 156

6. रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, बैरंग बेनाम चिट्ठिòयां, पृ. 239

7. वही, पृ. 235

8. रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, पक गई है धूप, पृ. 322

9. वही, पृ. 316

10. रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, कंधे पर सूरज, पृ. 378

11. वही, पृ. 388

12. रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, दिन एक नदी बन गया, पृ. 490

13. रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, दिन एक नदी बन गया, पृ. 504

14. वही, पृ. 522

15. रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–2, जुलूस कहां जा रहा है, पृ. 32